

## Efforts in reducing young infant mortality in Lucknow District: KGMU-GoUP-GOI-WHO partnership



### KGMU-WHO team: Implementation research on Possible Serious Bacterial Infection in Lucknow District

सम्पूर्ण भारत में नवजात बच्चों की मौत की दर 41/1000 है जबकि अकेले उत्तर प्रदेश में यह मृत्यु दर 63/1000 है। इस मृत्यु दर में 0-59 दिनों के बच्चों की संख्या सबसे अधिक है। एक अनुमान के मुताबिक 15 प्रतिशत शिशुओं में अधिक गंभीर जीवाणु संक्रमण (PSBI) में से एक या अधिक लक्षण मिलता है। और इनमें से एक चौथाई बच्चों के परिवार के सदस्यों द्वारा अपने बच्चे को भर्ती कर इलाज कराने से इंकार कर दिया जाता है। आधे से ज्यादा बच्चों के परिजन निजी/अयोग्य चिकित्सकों अथवा झाड़फूक करने वालों के पास चले जाते हैं यही नवजात बच्चों की उच्च मृत्युदर का कारण है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार (नेशनल हेल्थ मिशन) एवं किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के सहयोग से पीएसबीआई के लक्षणों की शीघ्र पहचान कर इससे होने वाले नवजात बच्चों की मौत को कम करने के उद्देश्य से एक शोध परियोजना पर कार्य किया जा रहा है। जिससे ऐसे बच्चों में पीएसबीआई को पहचान कर उनके उपचार के लिए उन्हें उचित सेक्टर पर भेजना, या घर के समीप उपचार मुहैया कराया जा सके और नवजातों के जीवन की रक्षा किया जा सके।

परियोजना की प्रमुख अन्वेषक प्रो० शैली अवस्थी, बाल रोग विभाग, केजीएमयू है। इस परियोजना को लखनऊ जिले के माल, काकोरी, सरोजनी नगर और गोसाईं गंज ब्लॉक में 1 जून 2017 से चलाया जा रहा है। डॉक्टर, एनएम, आशा को पीएसबीआई के पहचान के लिए प्रशिक्षित किया गया है।

और ए0एन0एम0 को को जेन्टामाइसिन के रेफरल खुराक देने के लिए प्रशिक्षित किया गया जिससे नवजात के जीवित रहने की संभावना बढ़ जाती है और उपचार में देरी से बचा जाता है। जो लोग उच्च रेफरल सेण्टर जाने से इंकार करते हैं उन्हें घर के पास ही आउटपेशेंट/एम्बुलेटरी केयर के तहत एमाक्सिसिलिन को दिन में दो बार मुख द्वारा माँ के द्वारा एवं इंजेक्शन जेन्टामाइसिन रोजाना सी0एच0सी0/पी0एच0सी0 पर डॉक्टर या ए0एन0एम0 के द्वारा दिया जाता है। परियोजना कर्मचारियों के निर्देशन में आशाओ द्वारा राष्ट्रीय गृह आधारित नवजात देखभाल कार्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सलाह दी जा रही है जहाँ वे बच्चे के जन्म के प्रथम 42 दिनों के अंदर 6 से 7 बार जाती है, जहाँ वह नवजात शिशु और माँ की जांच करती है। इस प्रकार आशा पी0एस0बी0आई0 के लक्षणों की पहचान करने के लिए तत्पर रहती है। यदि निम्न में से एक या अधिक लक्षण मौजूद हो - जहाँ जन्म से बच्चा मा का दूध या दूध न पी पा रहा हो, या पिना बंद कर दे या ठिक से ना पिये, आक्षेप, छाती में गंभीर आरेखण, बुखार या गर्म स्पर्श (37.5 डिग्री सेंटीग्रेड या ऊपर), कम शरीर का तापमान या ठंड (35.5 डिग्री सेंटीग्रेड से भी कम) तेजी से श्वास लेना (60 से अधिक श्वास प्रति मिनट), स्थानीय संक्रमण और पीलिया की जांच, उम्र बढ़ने की समस्याओं या कम वजन के कारण 7 दिनों से ऊपर की आयु में निमोनिया की पहचान करना है।

यह परियोजना पूर्व में काफी सफल रही है और इसे आशा बहंओ द्वारा पी0एस0बी0आई0 के लक्षणों को पहचाना जाना और ए0एन0एम0 द्वारा रेफरल से पूर्व जेन्टामाइसिन का डोज दिया जाना प्रशंसनीय है।

**Dr. Samira Abubaker** और **Dr. Kasaunde Mwinga** द्वारा 22 जुलाई, 2017 से 26 जुलाई, 2017 तक परियोजना क्षेत्र के पी0एच0सी0/सी0एच0सी0 और ग्राम्य सहायक केंद्रों पर भ्रमण कर परियोजना के कर्मचारियों, और समुदाय के लोगों से बात कर सतुष्ट हुये। वे परियोजना निदेशक श्री आलोक कुमार महाप्रबंधक चार्डल्ड हेल्थ डॉ0 अनिल वर्मा और किंग जार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मदनलाल ब्रह्म भट्ट से मिले तथा कुलपति प्रो0 भट्ट द्वारा परियोजना की सरहना की गई और मा0 कुलपति ने इस परियोजना की लगातार सहयोग प्रदान करने का अश्वासन प्रदान किया है।